INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS IN SOCIAL SCIENCES, ISSN: 3107-5096 (ONLINE)

पश्चिम में नारीवाद का उदय – संदर्भ एवं मुद्दे

राजकुमार
शोधार्थी– पीएच.डी
राजनीति विज्ञान विभाग
मेरठ कॉलेज मेरठ
एवं असिस्टेंट प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान विभाग
मुल्तानीमल मोदी कॉलेज, मोदीनगर
DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.16794760
Pg: 71-79

भूमिका–

दुनियाभर में इतिहास लेखन पूरी तरह पुरूष केंद्रित रहा है। यही कारण है कि 'मनुष्य' के इतिहास में बराबर की हिस्सेदार रहते हुए भी 'मानुषी' इतिहास ग्रंथों में नहीं के बराबर है। क्योंकि महिलाएं इतिहास के पन्नों में लगभग अदृश्य ही रही हैं, हमें उनके अतीत के संघर्ष और उनकी विफलताओं और सफलताओं के बारे में बहुत सीमित जानकारी ही मिल पाती है। यह परिस्थिति पश्चिमी (तथाकथित विकसित) देशों में। नारीवादी इतिहासकार निरंतर प्रयास करते रहे हैं कि प्राचीन काल से आज तक को स्त्रियों की सक्रिय एवम निर्णायक हस्तक्षेप के अकथित इतिहास को फिर से लिखा जा सके। कई महिलाओं ने स्त्रियों की हीनता तथा उनको सत्ता और प्रतिष्ठा के क्षेत्र से बाहर रखने की प्रचलित सामाजिक और धार्मिक धारणाओं पर सवाल उठाए। 1789 में जब फ्रांसीसी क्रांति अपनी चरम सीमा पर थी, ओलंप द गूज नामक महिला ने नई क्रांतिकारी व्यवस्था में समानता की सीमित अवधारणा को खुलेआम चुनौती दी। उनका कहना था कि क्रांतिकारी व्यवस्था दावा तो सार्वजनिक समानता का करती है परंतु समानता केवल संपन्न पुरुष नागरिकों को उपलब्ध है। इसमें स्त्रियों के लिए कोई जगह नहीं है।

एक शब्द के तौर पर नारीवाद (Feminism) शब्द का प्रयोग 1890 के बाद आम हो चला जबकि उसका इस्तेमाल उन लोगों को चिन्हित करने के लिए किया जाने लगा जो न केवल महिलाओं के लिए ज्यादा सार्वजनिक भूमिका के पक्षधर थे बल्कि एक व्यक्ति के तौर पर महिलाओं के हक में भी खड़े थे।

लेकिन 1890 के पहले भी नारोवादी चिंतन की बुनियाद को शुरुआती उदारवादी नारीवादियों की रचनाओं तथा समय समय पर उनके द्वारा ली गई भूमिकाओं में ज्यादा सुस्पष्ट रूप से पहचाना जा सकता है।

जब हम कहते हैं कि नारीवादी आंदोलन की शुरुआत उन्नीसवीं सदी के अंत और बीसवीं सदी के आरंभिक दशकों में हुई तो इसका अर्थ ये कदापि नहीं है कि इससे पहले महिलाएं राजनीतिक तौर पर सक्रिय नहीं थीं। शायद यह कहना ज्यादा ठीक होगा कि इसके पहले के इतिहास में हमें महिलाओं की राजनीतिक सक्रियता की किसी सार्वजनिक या लंबी परंपरा की जानकारी नहीं मिलती है।महिला अधिकारों की मांग केवल यूरोप और उत्तरी अमेरिका के देशों में ही नहीं बल्कि दक्षिण अमेरिका और एशिया में भी उभर रही थी।

महिलाओं के बारे में फैली गलत धारणाओं को ठीक करने में शुरुआती नारीवादियों में मैरी वूल्सटन क्राफ्ट (1759–1797) ने जोरदार ढंग से हस्तक्षेप किया। 1792 में लंदन से प्रकाशित अपने लेख 'Vindication of the Rights of Women' (महिलाओं के अधिकारों का समर्थन) में उसने महिला अधिकारों की जोरदार ढंग से हिमायत की। लड़के और लड़कियों के लिए आदर्श शिक्षा के रूसो के विचारों का उन्हाने खंडन किया जिसके मुताबिक लड़कों में विचारों का स्वातंत्र्य और निर्णय लेने की क्षमता विकसित करना आवश्यक था जबकि लड़कियों में आज्ञाकारिता, पतिव्रतता और सदाचारिता जैसे गुणों को विकसित करना आवश्यक था। बाद के समय में हैरिएट टेलर मिल (1807–1858) ने जॉन स्टुअर्ट मिल (1806–1873) के साथ मिलकर महिलाओं की मुक्ति की हिमायत करते हुए निबंधों की श्रृंखला प्रकाशित की। 1859 में प्रकाशित 'The Subjection of Women' (महिलाओं की अधीनता) में उन्होंने काम और परिवार की पारंपरिक प्रणालियों पर सवाल उठाया जो उनके मुताबिक महिलाओं को न केवल घर तक सीमित तथा प्रतिबंधित करती है बल्कि चयन के अधिकार से भी वंचित करती है।

आमतौर पर नारीवाद के पहले झोंके के तौर पर जाने जाने वाले नारी आंदोलन का विकास मताधिकार के मुद्दे पर हुआ। स्त्रियों को मताधिकार दिलाना नारीवाद के पहले चरण की उल्लेखनीय सफलता रही। लेकिन यह सफलता एक लंबे राजनैतिक संघर्ष के कठिन परिश्रम से ही मिल सकी, और वह भी बीसवीं सदी की शुरुआत के काफी बाद। संयुक्त राज्य अमेरिका में महिलाओं को मताधिकार 1919 में मिला। ब्रिटेन में 1927 तो फ्रांस में 1944 में महिलाओं को मताधिकार मिल पाया, जबकि अन्य पश्चिमी देशों में यह अधिकार और भी देरी से मिला जैसे–स्विट्जरलैंड में 1971 में।

उन्नीसवीं सदी से ही महिलाएं कई मोर्चों पर सक्रिय थीं और उन्होंने सामाजिक और राजनीतिक दोनो ही तरह के मुद्दों को उठाया, खासकर अमेरिका में कुछ महिलाएं ईसाई धार्मिक संस्थाओं की सक्रिय

सदस्य भी बनीं, कुछ महिलाएं आमूलपरिवर्तनवादी राजनैतिक दलों की सदस्य भी बनीं तो कुछ ने समकालीन साहित्यिक आंदोलनों से अपने को जोड़ा। चूंकि नारीवादी आंदोलन के इस चरण के दौरान दुनिया के कई हिस्सों में औपनिवेशिक शासन के खिलाफ संघर्ष उभर रहे थे। इसलिए हमें ये जानकर आश्चर्य चकित नहीं होना चाहिए कि पश्चिमी देशों की कुछ महिलाएं इन उपनिवेशों में भी महिलाओं का प्रतिनिधित्व कर रही थीं।

पश्चिमी संसार में अर्थात पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमेरिका के देशों में नारीवादी आंदोलन पर जो शोध साहित्य है उसमें आमतौर पर आधुनिक पश्चिमी नारीवादी इतिहास को परंपरागत रूप से समय अवधि, या "तरंगों या लहरों" में विभाजित किया जाता है, प्रत्येक का पूर्व प्रगति के आधार पर थोड़ा अलग उद्देश्य है;

19वीं और 20वीं शताब्दी की **पहली लहर** का नारीवाद कानूनी असमानताओं को खत्म करने, विशेष रूप से महिलाओं के मताधिकार के मुद्दों को संबोधित करने पर केंद्रित था। **दूसरी लहर** के नारीवाद (1960–1980) ने सांस्कृतिक असमानताओं, लिंग मानदंडों और समाज में महिलाओं की भूमिका को शामिल करने के लिए बहस को व्यापक बनाया। **तीसरी लहर** का नारीवाद (1990–2000) नारीवादी गतिविधि के विभिन्न प्रकारों को संदर्भित करता है, जिसे इसके कार्यकर्ताओं द्वारा स्वयं दूसरी लहर की निरंतरता और इसकी कथित विफलताओं की प्रतिक्रिया के रूप में देखा जाता है। **चौथी लहर** नारीवाद (2010 की शुरुआत–वर्तमान) तीसरी लहर के अंतरविरोध पर ध्यान केंद्रित करती है, जिसमें शरीर की सकारात्मकता, ट्रांस–समावेशिता और सोशल मीडिया युग में बलात्कार संस्कृति के बारे में एक खुले विचारों पर जोर दिया जाता है।

फ्रांस में नारीवाद का उदय –

प्राचीन फ्रांस में भी नारियों की जगह अन्य देशों की तरह घर की चारदीवारी के भीतर मानी जाती थी फ्रांसीसी क्रांति के समय महिलाओं ने अपनी इस पारंपरिक भूमिका को एक ओर रखकर उस समय की हिं ईईसक राजनीति में सक्रिय भाग लिया।

1688 में इंग्लैंड की ग्लोरियस क्रान्ति ने सामंतवाद का अंत किया तथा समानता और स्वतंत्रता के संदेश को प्रसारित करने में मदद की। 1776 में संपन्न हुई अमरीकी क्रांति अपने साथ स्वतंत्रता और सबके लिए सुख का विचार लाई। फ्रांसीसी क्रांति पर इन दोनों का ही असर था। नेशनल असेंबली ने अगस्त 1789 में 'मानव (Mens) और नागरिक अधिकारों की घोषणा' को अपना लिया जिसमें व्यक्ति के प्राकृतिक, अटूट और पवित्र अधिकारों में विश्वास करते हुए घोषणा की कि मनुष्य समान अधिकारों की स्वतंत्रताओ के

साथ पैदा होता है और इनके साथ ही जीता है। इन प्राकृतिक अधिकारों ने पुरानी, निर्दयी शासन व्यवस्था को ललकारने में जमीन मुहैया कराई। ये प्राकृतिक अधिकार स्वतंत्रता और समानता के लिए संघर्ष और तानाशाही पर आधारित पुरानी व्यवस्था के विरोध का आधार बने। इस क्रांति के साथ ही सुविधा भोगी संपन्न वर्ग के विरोध में नागरिकता का एक नया अर्थ भी सामने आया जिसके अंतर्गत किसी भी राष्ट्र पर शासन करने में भूमिका निभाने वाले किसी भी व्यक्ति को नागरिक माना गया लेकिन ये नागरिकता के विचार सिर्फ पुरुषों के लिए ही लागू होते थे। मेंडले गुडरीथ का तर्क है कि इस काल के कुछ लेखकों का स्त्रियों के प्रति विरोध और ज्यादातर क्रांतिकारी प्रवक्ताओं द्वारा इस विरोध के निष्ठापूर्ण अनुसरण के कारण महिलाएं पूण नागरिकता से दरकिनार कर दी गईं। तत्कालीन वर्चस्वशाली विचारों ने महिलाओं के नागरिक कार्य को घर की शांति भंग करने वाला कहकर नकार दिया। पुरुषों के अधिकारों की घोषणा के बाद महिलाएं संविधान के तहत अपनी जरूरत पर खरा उतरने वाले समाज के निर्माण में हिस्सेदारी के हक से वंचित हो गईं। 1789 में कुछ महिला समूहों और धार्मिक समुदायों ने नागरिकता से खुद को वंचित किए जाने पर अपनी निराशा व्यक्त की। जब पुरुष घरेलू नौकरों को 1791 में नागरिक अधिकार प्रदान किए गए तब भी महिलाओं ने नागरिकता से वंचना का दर्द महसूस किया। ओलंप द गोउज ने महिलाओं के अधिकारों का वैकल्पिक घोषणा पत्र (Declaration of the Rights of Women) जारी किया;

"महिलाएं स्वतंत्र रूप से जन्मी हैं और उनके अधिकार पुरुष अधिकारों के समान हैं। कानून सामान्य इच्छा की अभिव्यक्ति होना चाहिए, सभी नागरिकों, पुरुष हों या स्त्री, को इसे बनाने की जिम्मेदारी होनी चाहिए। महिलाओं को फांसी के तख्ते पर जाने का अधिकार है तो उसे संसद में भी जाने का अधिकार होना चाहिए।" अपनी बात सुनाने के महिलाओं के तरीकों जिनमें क्रांति के तर्कों और भाषा का ही इस्तेमाल किया गया था, पर जो चुप्पी साधी गई उससे यह स्पष्ट हुआ की क्रांति का उद्देश्य केवल पुरुषों के गणतंत्र की स्थापना था इसलिए जॉन लैंड्स कहती हैं की क्रांति महिलाओं के खिलाफ की गई न की सिर्फ उनके बिना। जहां प्रत्येक संसदीय सुधार एक्ट ने अधिक से अधिक पुरुषों के लिए मताधिकार का विस्तार किया, वहीं महिलाओं को 1928 में भी एक शताब्दी के संघर्ष के संघर्ष बाद भी वयस्क मताधिकार के आधार पर पुरुषों के बराबर अधिकार नहीं मिले थे। ये अधिकार उन्हें 1948 में जाकर मिलते हैं।

इंग्लैंड में नारीवादी सोच का उदय –

इंग्लैंड में भी महिलाओं की स्थिति बहुत अच्छी नही कही जा सकती थी विवाहित अंग्रेज औरतों को अपने बच्चे पर कोई कानूनी अधिकार नही होता था, अगर पिता चाहे तो अपने बच्चे को मां से छीनकर किसी और के संरक्षण में रख सकता था, पति अपनी पत्नी और बच्चों को अपनी संपत्ति से बेदखल कर

सकता था। तलाक कानून भी असमान था। समाज नारी की इस अमानवीय स्थिति के प्रति उदासीन था। इंग्लिश कॉमन लॉ के अनुसार पत्नी की सारी संपत्ति पर पति का अधिकार होता था।

1688 की ग्लोरियस क्रान्ति या रक्तविहीन क्रान्ति के परिणाम स्वरूप इंग्लैंड से निरंकुश राजशाही की समाप्ति हुई और संसद की सर्वोच्चता स्थापित हुई, हालांकि यह भी सच है कि उस समय संसद न तो लोकतांत्रिक तरीके से चुना हुआ कोई निकाय था और न ही वह जानता के सभी हिस्सों का प्रतिनिधित्व करता था। वोट का अधिकार आबादी के बहुत ही छोटे हिस्से तक सीमित थी, पूरी अट्ठारहवी और उन्नीसवीं शताब्दी में संसद को एक लोकतांत्रिक संस्था के रूप में विकसित होने देने की मांग उठी, विशेषकर कामगार, गरीब और पूंजीवादी तबके की ओर से यह मांग जोरदार तरीके से उठाई गई। 1832 के संसदीय सुधार अधिनियम के साथ ही मताधिकार का दायरा संपत्ति के स्वामित्व या पट्टेदारी के आधार पर पुरुष आबादी के अन्य हिस्सों तक बढ़ाया गया, कामगारों के मताधिकार के लिए चार्टिस्ट आंदोलन की शुरुआत की गई थी। हालांकि 1850 के दशक में यह आंदोलन धीमा हुआ, लेकिन फिर भी इसने अपना प्रभाव छोड़ा और 1861, 1882, 1918 और 1928 के अधिनियमों के माध्यमों से सभी वयस्क नागरिकों को मताधिकार दिया गया। इस तरह संसद की सर्वोच्चता के सिद्धांत की स्थापना के 200 सालों बाद संसद सही मायने में एक इकाई बन पाई।

ब्रिटेन में हुए नारीवादी आंदोलन और संघर्ष की प्रकृति और तेजी के आधार पर इसे अलग अलग चरणों में विभक्त किया जा सकता है।

- आमूलपरिवर्तनवादी (रेडिकल) संगठनात्मक चरण, इस पहले चरण में महिलाओं ने अपने आप को कामगारों के आंदोलन और चार्टिस्ट आंदोलन से जोड़ा।

- संवैधानिक मताधिकार का चरण जो बीसवीं सदी के आरंभ तक रहा।

- अंतिम और सबसे सघन चरण 'मिलिटेट सफरेजेट' का चरण जिसने एक तरफ तो अपने हिंसक स्वरूप के कारण जनता की संवेदनाओं को झकझोर दिया और दूसरी तरफ सरकार की ओर से तीव्र दमन को आमंत्रित किया।

मताधिकार आंदोलन के तीनों चरण की गतिविधियों का केंद्र बिंदु था, संसद सदस्यों पर दबाव बनाना ताकि वे महिलाओं के मताधिकार संबंधी सुधार लाएं। ज्यादातर मामलों में अपील की प्रकृति ऐसी थी कि पुरुषों के साथ किसी भी तरह का कोई भी टकराव न हो और उन्हें अपने संघर्ष में सहयोगी के तौर पर शामिल किया जाए। महिला मताधिकार विरोधियों द्वारा उनके उन स्वाभाविक लक्षणों के विषय में बातचीत की गई जो उन्हें पुरुषों से अलग प्रजाति बनने के लिए अयोग्य बनाते हैं। ऐसी बातें महिला मताधिकार की

बहसों में खूब गूंजी। इस प्रकार 1792 में ग्लैडस्टोन न अपनी उस प्रतिबद्धता को जोरदार तरीके से प्रकट किया कि 'लिंग विभेद ईश्वर द्वारा प्रतिपादित है और इसीलिए यह मौलिक है, और इसे बदला नहीं जा सकता। ग्लैडस्टोन के अनुसार महिलाओं को मताधिकार देना निरर्थक और विध्वंसक साबित होगा, क्योंकि महिलाएं प्रायः अर्ध सामाजिक ओर स्वार्थी स्वभाव के कारण व्यापक सार्वजनिक हित के बजाय अपनी संकीर्ण रुचियों पर ध्यान केंद्रित करेंगी।'

1897 में मिलिसेंट फॉसेट की अध्यक्षता में विमेंस लिब्रेशन फ्रंट के अलग अलग शाखाओं को मिलाकर एक एकजुट समूह ेनेशनल यूनियन ऑफ वूमेन सफरेज सोसायटीज़ का गठन किया गया। मताधिकार समर्थकों ने उदारवादीयों और संसदीय विपक्ष के प्रति अपनी निराशा व्यक्त की। 1898 में Westminster Review में एलिजाबेथ एल्मी द्वारा एक पत्र लिखकर कहा गया, 'अगर हमें मताधिकार के लिए तब तक इंतजार करना पड़ेगा जबतक कि लिबरल पार्टी इतनी प्रशिक्षित हो जाए कि वो ये अधिकार देने के लिए तैयार हो जाए तो हमें डर है कि यह हमारी या अपनी जिंदगी रहते नहीं आएगा३. मेरी समझ से किसी भी महिला की यह भूल होगी कि वह पहले पार्टी की और बाद में मताधिकार समर्थक बने।' 1906 तक आक्रामक तरीके अपनाने की वजह से ये आंदोलन एक नई ऊंचाई पर पहुंचा। 1919 में महिलाओं को चुनाव लडने का अधिकार मिला और 1928 में उन्हें पुरुषों के समान शर्तों पर मताधिकार दिया गया।

अमेरिका में नारीवाद का उदय –

संयुक्त राज्य अमेरिका में नारीवाद को अक्सर कालानुक्रमिक रूप से पहली–लहर, दूसरी–लहर, तीसरी–लहर और चौथी–लहर नारीवाद में विभाजित किया जाता है। संयुक्त राज्य अमेरिका में नारीवाद की पहली लहर सेनेका फॉल्स कन्वेंशन के साथ शुरू हुई, पहला महिला अधिकार सम्मेलन, 19 और 20 जुलाई, 1848 को न्यूयॉर्क के सेनेका फॉल्स में वेस्लेयन चैपल में आयोजित किया गया।

संयुक्त राज्य अमेरिका में द्वितीय–लहर नारीवाद 1960 के दशक की शुरुआत में शुरू हुआ। अधिकांश ६० के दशक में और १९७० में समाप्त होने के दौरान, दूसरी लहर नारीवाद ने आमतौर पर आदर्श वाक्य का पालन किया, "व्यक्तिगत राजनीतिक है।" 1963 में द सेकड सेक्स से प्रभावित बेट्टी फ्राइडन ने बेस्टसेलिंग किताब द फेमिनिन मिस्टिक लिखी जिसमें उन्होंने महिलाओं की मुख्यधारा की मीडिया छवि पर स्पष्ट रूप से आपत्ति जताई, जिसमें कहा गया कि महिलाओं को घर पर रखने से उनकी संभावनाएं सीमित हो जाती हैं, और प्रतिभा और क्षमता बर्बाद हो जाती है।

संयुक्त राज्य अमेरिका में तीसरी लहर का नारीवाद 1990 के दशक की शुरुआत में शुरू हुआ। तीसरी लहर के नारीवादियों ने उन विचारों, शब्दों और मीडिया पर सवाल उठाने, पुनः प्राप्त करने और फिर

से परिभाषित करने की मांग की, जिन्होंने अन्य बातों के अलावा लिंग, लिंग भूमिका, नारीत्व, सौंदर्य और कामुकता के बारे में विचारों को प्रसारित किया है।

चौथी लहर का नारीवाद, नारीवाद में रुचि के पुनरुत्थान को संदर्भित करता है जो 2012 के आसपास शुरू हुआ। जिन मुद्दों पर चौथी लहर के नारीवादी ध्यान केंद्रित करते हैं उनमें सड़क और कार्यस्थल उत्पीड़न, परिसर में यौन हमला और बलात्कार संस्कृति शामिल हैं।

1776 के स्वतंत्रता के अमरीकी घोषणा ने मानवीय समानता के क्रांतिकारी विचारों का समर्थन किया। 1789 में अमेरिका के संविधान में पहले दस संशोधनों द्वारा जोड़े गए ृबिल ऑफ राइट्सृ के कारण अमेरिकी जनता को बहुत सारे अधिकार मिले जिसमें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, प्रेस की आजादी और न्याय के अधिकार शामिल हैं। हालांकि घोषणा द्वारा किए गए समानता के वायदे सब पर लागू नहीं होते थे। घोषणा पर हस्ताक्षर हाने के 90 साल बाद तक दास प्रथा जैसी कुरीति जारी रही और अमेरिका स्थित भारतीय, अफ्रीकी–अमेरिकी और महिलाओं को राजनीतिक नागरिकता से बाहर ही रखा गया था। हम 1830 के दशक में यहाँ नारीवादी सक्रियता की शुरुआत देख सकते हैं। वह महान सामाजिक अशांति और यूटोपियन आंदोलनों के प्रसार का समय था।

अमेरिकी नारीवाद समानता के लिए कई व्यापक आंदोलनों से उभरा जिनमें से एक था 'श्रमिक आंदोलन', मैसाचुसेट्स के मिल कस्बों और न्यू इंग्लैंड के अन्य हिस्सों में आजीविका और सुरक्षित परिस्थितियों के लिए कामकाजी पुरुषों और महिलाओं का आंदोलन। 1837 में और 1840 और 50 के दशक में, न्यू इंग्लैंड के मिल श्रमिकों ने उच्च वेतन, कम कार्यदिवस और सुरक्षित कामकाजी परिस्थितियों के लिए लड़ने के लिए बोस्टन में राज्य विधानमंडल पर मार्च किया।

दूसरा था 'गुलामी विरोधी आंदोलन', गुलामी के खिलाफ आवाज उठाने वाली कुछ अग्रणी महिलाओं से कहा गया था कि वे मंच पर कब्जा नहीं कर सकतीं और ऐसा करना अप्राकृतिक और गैर–महिला संबंधी था। एंजेलीना और सारा ग्रिमके जैसे नेताओं ने उस धारणा के खिलाफ लड़ाई लड़ी और कहा कि महिलाओं को भी बोलने का अधिकार है।

ग्रीमके बहनों (साराह और एंजेलीना), ल्यूकरेटिया मोट और एलिजाबेथ कैडी स्टैंटन जैसी नारीवादियों ने दास प्रथा और महिला अधिकारों को एक साथ जोड़ा। उन्होंने 19,20 जुलाई 1848 में सेनेका में विमेंस राइट्स कन्वेंशन का आयोजन किया जिसे सेनेका फाल्स कन्वेंशन के नाम से जाना जाता है। यहां छोटे से गिरजाघर में लगभग 300 पुरुष और महिलाएं एकत्रित हुए और ृडिक्लेरेशन ऑफ सेंटीमेंट्स एंड ट्वेल्व रिजॉल्यूशसृ को स्वीकृत किया। डिक्लेरेशन ऑफ सेंटीमेंट्स को डिक्लेरेशन ऑफ इंडिपेंडेंस में

बदला गया, इसने महिलाओं और पुरुषों की समानता की बात की और कहा कि उनका सृजन समान रूप से हुआ है और सृजनकर्ता ने उन्हें समान अधिकार दिया है। सोजॉर्नर ट्रुथ जैसी गुलाम महिलाएं भी थीं, जिन्होंने 1850 के दशक में भाषणों की एक प्रसिद्ध श्रृंखला में बताया कि दास महिलाओं को किस तरह खेतों में काम करने के लिए मजबूर किया गया; उन्हें पीटा गया और बलात्कार किया गया, और उनके बच्चों को उनसे बेच दिया गया। और फिर भी वे महिलाएँ हैं, तो किस आधार पर उन्हें वोट देने, अपने बच्चों की देखभाल करने और उनके साथ रहने के अधिकार से वंचित किया जा सकता है?

1861 में गृहयुद्ध की शुरुआत के साथ ही महिला अधिकारवादियों से कहा गया कि वे अपने लक्ष्य को त्याग दें। हालांकि सुसान एन्याज और एलिजाबेथ स्टैंटन स्वतंत्रता के किसी भी संघर्ष में महिलाओं की स्वतंत्रता को जरूर शामिल करने के तर्क को दुहराते रहे। युद्ध के दौरान महिलाओं के आंदोलन की गतिविधियां रूक गई थीं। युद्ध के बाद दास प्रथा को समाप्त करने वाले 13वे संशोधन के लागू होने के बाद महिला अधिकारवादियों ने नागरिकों को और अधिक अधिकार और सुविधाएं देने के लिए प्रस्तावित 14वे संशोधन को लागू करने की मांग पर जोर देने लगीं। जब महिलाओं ने'सेक्स' शब्द को प्रस्तावित 15वे संशोधन (जो नस्ल के आधार पर मताधिकार के मनाही का निषेध करता था) में जोड़ने का अभियान चलाया तब भी उन्हें वैसा ही जवाब मिला। इस विरोधी कृत्य ने नारीवादी आंदोलन को प्रेरित किया कि वह मताधिकार को ही अपने संघर्ष की मुख्य धुरी बनाएं। मई 1869 में `नेंद बी एंथनी, एलिजाबेथ केडीस्टैंटन, लूसी स्टोन व अन्य महिलाओं द्वारा अनेक मताधिकार संगठनों का गठन किया गया जिसमें महिलाओं के अपने सवालों को मताधिकार के सवाल पर केंद्रित किया। 1913 में एक युवा आक्रामक मताधिकारवादी एलिस पाउल ने कांग्रेसनल यूनियन नामक एक रेडिकल समूह की स्थापना की जिसको वूमेंस पार्टी के नाम से पुनरसंगठित किया गया। ब्रिटेन से प्रभावित होकर यूनियन ने जुलूसों, विशाल प्रदर्शनों, भूख हड़तालों जैसे और तरीकों का इस्तेमाल किया जिसमें कई कार्यकर्ता जेल भी गए। आंदोलन के इस तरीके ने अमरीकी समाज को भी आंदोलित कर दिया। जिस महिला मताधिकार संशोधन (19वा संशोधन–जिसे एंथनी संशोधन के नाम से भी जाना जाता है) पर 1878 से कांग्रेस के प्रत्येक सत्र में बहस होती थी, अन्ततः उसे 26 अगस्त 1920 को पारित किया गया और महिलाओं को उनका अधिकार मिला।

निष्कर्ष:

महिला अधिकार के हिमायतियों द्वारा नारीवाद का वर्गीकरण (उदार, रेडिकल, सांस्कृतिक, समाजवादी, मार्क्सवादी, पर्यावरणीय आदि) करना न केवल इस एकता की अहमियत को कम करके आंकता है बल्कि यह गलत प्रस्तुति भी करता है कि नारीवाद की विचारधारा उदारवाद, समाजवाद या अन्य विचारधाराओं की महज सहायक है। यह बात ऐतिहासिक तौर पर सही नहीं है। दरअसल महिला अधिकारों

को संबोधित करने में उदारवाद आर समाजवाद जैसी विचारधाराओं की विफलता की पृष्ठभूमि में ही नारीवाद का उदय हुआ है।

पश्चिम में नारीवाद का उदय सार्वभौमिक मताधिकार से जुड़े मुद्दे पर हुआ। मताधिकार के लिए महिलाओं के संगठित संघर्ष नें मताधिकार को एक राजनीतिक अधिकार के रूप में सार्वभौमिकता प्रदान की है। नारीवादी आंदोलन को संगठित करने में मताधिकार की केन्द्रीय भूमिका रही है (अमेरिका, फ्रांस व इंग्लैंड के संदर्भ में)। वोट के अधिकार के लिए संघर्ष ने महिलाओं को अपने परिवार के बीच उचित स्थान को सीधी चुनौती तो नहीं दी परन्तु फिर भी राजनीतिक समानता के अधिकार की मौलिक मांग को उभारकर सामने ला खड़ा किया। यह महिलाओं के नागरिकता पर केंद्रित राजनीतिक शक्ति और राजनीतिक हिस्सेदारी के अधिकार की मांग थी। इस प्रकार मताधिकार के लिए चलाए गए आन्दोलनों द्वारा नारीवादी मुद्दे सार्वजनिक बहस के हिस्से बनने लगे।

संदर्भः

- *जैगर, एलिसन (1983), 'फेमिनिस्ट पॉलिटिक्स एंड ह्यूमन नेचर', हार्वस्टर प्रेस, ससेक्स.*
- *पुनाचा,वीना (1995), 'जेंडर विदिन द ह्यूमन राइट्स डिस्काउर्स', रिसर्च सेंटर फॉर विमेंस स्टडीज, SNDT विमेंस यूनिवर्सिटी प्रेस, बॉम्बे.*
- *कार्टर, अप्रेल (1988), 'द पॉलिटिक्स ऑफ विमेंस राइट्स', लॉन्गमैन प्रेस, हार्लो, अमेरिका.*
- *रूबिनस्टीन, डेविड(1986), 'बिफोर द सफ़रेजेट्सः विमेंस इमैनसिपेशन इन द 1890', द हार्वस्टर प्रेस, ससेक्स.*
- *लैंडेस, जॉन बी.(1988), 'वूमेंस एंड द पब्लिक स्फेयर इन द एज ऑफ द फ्रेंच रेवोल्यूशन', इथाका, कॉर्नेल यूनिवर्सिटी प्रेस.*
- *हॉलिस, पैट्रिशिया (1979), 'वूमेन इन पब्लिकः द वूमेंस मूवमेंट 1850द्1900', जॉर्ज एलन एंड अनविन प्रेस, लन्दन.*
- *कैंडीस्टैंटन, एलिजाबेथ; एंथनी,सुसन; जोसलिन, मथील्दा (1881), 'द हिस्ट्री ऑफ विमेंस सफरेज', वॉल्यूम 1, रोचेस्टर प्रेस, न्यूयार्क.*
- *आर्य, साधना; मेनन,निवेदिता; लोकनीता,जिनी (2001), 'नारीवादी राजनीतिः संघर्ष एवं मुद्दे', हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय.*
- *रायन,बार्बरा (1992), 'फेमिनिज़्म एंड द विमेंस मूवमेंट', रूटलेज प्रेस.*
- ओफ़ेन, करेन एम.(2000), 'यूरोपीय नारीवाद, 1700–1950 : एक राजनीतिक इतिहास' स्टैनफ़ोर्डः स्टैनफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
- पैलेट्सचेक, सिल्विया, पिएत्रो–एनकर, बियांका (संपादक) (2004), 'उन्नीसवीं सदी में महिला मुक्ति आंदोलनः एक यूरोपीय परिप्रेक्ष्य', स्टैनफोर्ड, स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.